द्वितीय अध्याय

विवेच्य कहानियों का वस्तुपरक विवेचन

द्वितीय अध्याय

"विवेच्या कहानयिों का वस्तुपरक विवेचन"

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य मे अन्य विधाओ की तरह कहानी साहीत्य भी लोकप्रिय रहा है। प्रसिध्द कथाकार जयशंकर प्रसाद ने अन्य विधाओं की तरह कहानी विधा में भी पर्याप्त लेखन कार्य किया है। प्रसाद हिंदी साहीत्य के श्रेष्ठ लेखक है।

२.१ जयशंकर प्रसाद के 'आकाश दीप' में निहीत कहानियों का वस्तुवरक विवेचन :

जयशंकर प्रसाद ने साहित्य और समाज का अटुट संबंध माना है। प्रसाद के कहानियों में सामाजिक जीवन, रुढी–परंपरा वादी समाज, सफल प्रेम, असफल प्रेम, भारतीय संस्कृति आदि का चित्रण किया है। प्रसाद के 'आकाश – दीप' कहानी संग्रह में कुल मिलाकर उन्नीस कहानियाँ है।

आकाश दीप कहानी संग्रह में निम्नलिखीत कहानियाँ हैं।

१) आकाश दीप
२) ममता
३) स्वर्ग के खंडहर में
४) सुनहला साँप
५) हिमालय का पथिक
६) भिखारिन
७) प्रतिध्वनि
८) कला
९) देवदासी
१०) समुद्र–संतरण
११) वैरागी
१२) बनजारा
१३) चूड़ीवाली
१४) अपराधी
१५) प्रणय–चिहन्
१६) रुप की छाया
१७) ज्योतिष्मती
१८) रमला
१९) बिसाती

उपरयक्त कहानियों का वस्तपरक विवेचन निम्नलिखीत है –

२.१.१ आकाश दीप :

"आकाश दीप" यह एक प्रेम कहानी है। यह कहानी चंपा और बुध्दगुप्त के जीवन पर आधारीत कहानी है। चंपा और बुध्दगुप्त नाव में बंदी थें। मौका मिलते ही दोनों आझाद हो जाते हैं। बुध्दगुप्त नायक को व्दंव्दयुध्द में पराजित कर नौका का स्वामी बन जाता है।

चंपा बुध्दगुप्त को बताती है कि वह नाव पर कैसे बंदी हो गई। चंपा एक क्षत्रिय बालिका है। चंपा के पिता माणिभद्र के यहां प्रहरी का काम करते थें। माता के देहावसान के बाद वह पिता के साध नाव पर ही रहने लगो थी। मणिभद्र ने एक दिन घृणित प्रस्ताव किया तो चंपा ने उसे गालियाँ सुनादी। तब से वह बंदी बना दी गई।

चंपा दीप जलाती है तो बुध्दगृप्त उसके पर दीप पर व्यंग्य करता है। तब चंपा उसे बताती है कि आँधी में हम प्रकाश की एक – एक किरण के लिए कितने व्याकुल थे, उसे याद है जब वह छोटी थी तब उसके पिता समुद्री यात्रा पर जातें तो उसकी माँ मिट्टी का दीपक बाँस की पिटारी में भगीरथी के तह पर बाँस के साथ उँचा टांगा देती और भगवान से प्रार्थना करती कि मेरे पथ – भ्रष्ट नाविक को अंधकार में ठीक पथ पर ले चलना। जब पिता वापर आते तो माँ से कहते साध्वी! तरे प्रार्थना से भगवान ने मेरी रक्षा कर ली तो यह सुनकर माँ भी प्रसन्न हो जाती थी।

चंपा और बुध्दगुप्त एक – दुसरे को दिल देकर प्यार के बंदी बन जाते है। चंपा बुध्दगुप्त से प्यार करती है लेकिन चंपा को इस बात का पता था कि उसे पिता की हत्या जलदस्यु के हाथों हुई थी। चंपा वही जलदस्यु बुध्दगुप्त को समझती है। इसी बात को मन में लेकर वह चाहकर भी बुध्दगुप्त की नहीं बन सकती। बुध्दगुप्त चंपा के लिए नए व्दीप की निर्मिती करता है, नयी प्रजा खोजता है।

बुध्दगुप्त चंपा के सामने शादी का प्रस्ताव रखता हैं.। लेकिन चंपा उसे इन्कार करती हैं। चंपा कहती है कि मैं तुम्हारे लिए अपने प्राण भी दे सकती हुँ लेकिन शादी नहीं कर सकती क्योकि उसे लगता है कि उसे पिता का हत्यारा बुध्दगुप्त है। बुध्दगुप्त उसे समझाता है लेकिन चंपा उसपर विश्वास नहीं करती। बुध्दगुप्त चंपा से स्वदेश लौटने की बात कहता है लेकिन चंपा इन्कार करती है। वह बुध्दगुप्त को बताती है, "मैं यही पर रहूंगी। व्दीप गृह में दिया जलाती रहूंगी। दूसरों की सेवा करुंगी। तुम वापस जाओ।" तब बुध्दगुप्त स्वदेश लौट जाता है और चंपा व्दीपगृह पर दीप जलाती रह जाती हैं। दुसरों की सेवा में वह अपना जीवन समाप्त कर देती है। जैसे दीप खुद जलकर दुसरों को प्रकाश देता है वैसे ही चंपा खुद जल गई और दुसरों की जिंदगी प्रकाशमय बना गई।

२.१.२ ममता

"ममता" यह ऐतिहासिक कहाती है। जिसमें हिंदुस्थान पर मुहाल, पठानों के हमलों ने लोगों का, राजा –महाराजाओं का जीना हराम कर दिया था ! रोहतास – दुर्गपति के मंत्री चुडमाणि थें। वहे ब्राम्हण थें। ऐसे हो शेरशाह के हमले में ममता के पिता मारे जाते हैं। राजा – रानी शेरशाहा के हाथ आते हैं। ममता भाग जाती है। वह विधवा थी। समाज में उसका जीना भी मुश्किल हो जाता हैं। ममता का यौवन शोण के समान उमड़ रहा था। पिता को अपनी बेटी की चिंता थी। बौध्द स्तुप में ममता शरण लेती है। उसी झोपडे में रात के अंधेरे में मुघल शरण मांगता हैं। जिन्होने उसके पिता की हत्या की थी, उसकी आश्रय देने की इच्छा न होने पर भी मेहमान तो भगवान का रुप होता है एस भारतीय परंपरा के अनुसार उसने मुघल को जगह दी। वह हुमायूँ बादशहा था। दुसरे दिन उसके साथी आकर उसे ले जाते हैं, उसने मिरजा को वहाँ महल खड़ा करने को कहा था। बादशहा मिरजा से कहता है, जबा मैं मुसिबत में था तो मुझे वहां सहारा मिला। लेकिन मैं उस स्त्री को कुछ दे न

सका। उसका घर बनवा देना, क्योंकि विपत्ति में यहाँ विश्राम पाया था। यह जगह भूलना नहीं। यह बात ममता सून लेती हैं।

बहुत दिन बीत जाते हैं। ममता अब सत्तर वर्ष की वृध्द हो जाती है। वह बिमार रहती है गाँव की दो – तीन स्त्रियाँ उसकी देखभाल करती हैं क्योंकि अपना सारा जीवन ममता ने दुसरों के सुख – दु:ख में बिताया था।

बादशहा हुमायुँ का बेटा उस जगह पर जाता है जहाँ का मिरजा ने चित्र बनाकर दिया था। वह ममता को बुला लेता है। ममता आकर कहती है कि, वह नहीं जानती थी कि वह शहंशाह था जिसे उसने अपनी झोपड़ी में आश्रय दिया था। ममता उसे कहती है कि तुम इसका मकान बनाओ या महल मैं अंतिम यात्रा पर निकलती हूँ। ममता का अंत हो जाता है। उस जगह पर एक अष्टकोण मंदिर बनवाया जाता है। उसपर शिलालेखा लगाया जाता है "सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उनकी स्मृति में गगनचुंबी मंदिर बनवाया।" १ उसमें ममता का नाम नहीं होता। ममता अपने नाम को सार्थक बना देती हैं।

२.१.३ स्वर्ग के खंडहर में :

प्रस्तुत कहानी में दिखाया मुगल है कि और पठानों से संघर्ष कर रहे आर्य नरपति भीमपाल के साथ ही शाही वंश का अस्त हुआ। यह भी ऐतिहासिक प्रेमकथा है जो मीना – गुल – बहार और देवपाल, लज्जा, तार की प्रेमकहानी है। अपने माता–पिता से बिछड़ी मीना गुल से प्यार करती है। पर वह बहार के साथ निकल जाता है।

उस स्वर्गभूमी पर शेख राजा था। वह अपने आपको मौत का दुत भी मानता था। मीना अपनी सुध – बुध खो बैठी थी। शेख उसपर गीत गाने का काम सौपंता है। वह आपने आप को रास्ताभुली बुलबुल समझती है। उधर लज्जा बौध्द विहार में रहते समय देवपाल का बेटा और मान्य लोगों को आश्रय देती है।

१– जयशंकर प्रसाद, आकाश दीप कहानी संग्रह– "ममता" – पृष्ठ क्र. २२

शेख, लज्जा और देवपाल को बंदी बनाता है। शेख की स्वर्गभूमी पर तनार के खान हमला करते हैं। उसमें देवपाल, लज्जा और गुल मारे जाते हैं। उन्हींके पास बैठी मीना को विक्रम देखकर पुछता है तुम शेख की बेटी हो, तो वह सचेत होकर कहती है मैं आपकी बेटी लीला हूँ। उसका मानसीक संतुलन बिघड़ चुका था। उसका पिता उसे स्मरण देने पर भी वह अपने आप को बुलबुल जो पथ भटकी है ऐसा समझती है। मीना विक्रम से कहती है, मुझे एक रात विश्राम करने दो मैं तुम्हें एक तान सुनाऊंगी। एक स्वर्गभूमी खंड़हर में बदलती है। उस काल की राजनीतिक सच्चाई पर इस कहानी ने प्रकाश ड़ाला है। पिता–पुत्री का वात्सल्य दिखाया है।

२.१.४ सुनहला साँप :

"सुनहला साँप" इस कहानी में चंद्रदेव और देवकुमार दोनों दोस्त हैं। हर इस्सान दुसरे को ठीक समझता है ऐसा समझना, वास्तव में इन्सान के मन में झाँकना संभव नहीं है। एस कहानी का उद्देश्य भी यही है क्योंकि चंद्रदेव इस कहानी में हर भौतिक सुख लुटाने की लालसा करनेवाला है तो देवकुमार कुछ बातों से दुर रहनेवाला हैं।

रामू चंद्रदेव का नौकर है। वे दोनों साँप पकडने का काम करते हैं। तभी चंद्रदेव की वहां पर एक स्त्री से मुलाकात होती है वह भी साँप पकड़ने का काम करती है। उसका सौंदर्य चंद्रदेव को पहली नजर में आकर्षित करता है। उस स्त्री का नाम था नेरा वह भी साँप का खेल दिखाती थी। चंद्रदेव उसके सुनहले साँप के लिए एक शिशे का बक्सा देता है। रामू एकटक नेरा की ओर देख रहा था।

रामू को भली–भाँति समझता हूँ ऐसा कहनेवाला चंद्रदेव रामु और मेरा की प्रेम कहानी को देखकर चौंक जाता है। रामु मेरा के लिए मालिक की

शराब चुराने आता है, सीधा – साधा रामु नेरा के प्यार में कब खो गया इसका मालिक को अंदाजा भी नहीं हुआ। चंद्रदेव रामू को नोकरी से निकाल देता है।

ग्यारह महीने बाद फिर उसी होटल में चंद्रदेव आ जाता है। चंद्रदेव शीशे से बाहर देखता है तो रामू सिर पर पिटारा धर चला रहा है और पीछे – पीछे अपनी मंद गति से नेरा। नेरा चंद्रदेव की तरफ देखती है और मुस्कुराकर सलाम करती रामू के पीछे चली जाती है। चंद्रदेव परदा बंद करता हैं। खुद इन्सान अपने आप को समझ नहीं, पाता, तो दुसरे को समझना क्या संभव है? चंद्रदेव इसी सोच में पड़ जाता हैं।

२१.५ हिमालय का पथिक :

"हिमालय का पथिक" यह कहानी हिमालय की गोंद में घुमनेवाले प्रकृति प्रेमी पथिक की कहानी है। पर्वत का अनुपम सौंदर्य, नदी, नालें, झरनें, आदि की अलौकिक संपदा देखकर भी इस पथिक की इच्छा पुरी नहीं हुई। वृध्द और किन्नरी के यहाँ वह रुक गया।

किन्नारी बहुत खुबसुरत है। उसका सौंदर्य देखकर पथिक भी उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। पथिक कुछ दिनों का मेहमान था मगर किन्नारी के मन में बस गया था। पथिक क्यों चल रहा हैं यह उसे भी मालुम नहीं। एकदिन उसने किन्नरी के बालों मे फुलमाला पहना दी जो वृध्द को अच्छा नहीं लगा।

वृध्द पथिक से कहता है कि तुमने पाप किया इसलिए तुम्हें दंड़ मिलना चाहिए। पथिक कहता है मैंने पाप नही किया, देवता के निर्माल्य को और भी पवित्र बनाया। उसे प्रेम के गंधजल से सुरभित कर दिया।

हिमालय पर कोई नहीं गया ऐसी जगह पर पथिक जा रहा हैं। उसके साथ किन्नारी भी जा रही है। वृध्द ने देखा कि उपर से बादलों से बर्फ आ रही है। मगर उसने पहले पुकारा होता तो बात निराली थी। मगर वह खुनी बर्फ वृध्द और उन दोनों के बीच है!

२.१.६ भिखारिन :

"भिखारिन" इस कहानी में प्रसाद ने दिखाया है कि, हिंदूस्थान में धर्म की बात करते हैं मगर असल में लोग धर्म, दया, प्रेम, इन्सानीयता यह सब भूल जाते हैं। नदी में स्नान करना, पुजा – अर्चा करना यही धर्म बन गया है। निर्मल की माँ भी गंगा में स्नान करती है और पंडित जी से पूजा–अर्चा करवाती है। निर्मल देखता है कि, "एक चौदह बरस की भिखारिन भीख मांग रही है।"१ पंड़ाजी उसपर चिल्लाते है, उसे वहां से जाने को कहते हैं। निर्मल अपनी माँ से कहता है कि, उसे कुछ दे दो। लेकिन निर्मल की माँ उसकी तरफ देखती भी नहीं हैं। उस बालिका की तरफ देखकर निर्मल को उसकी देया आती है।

धर्म का पालन करनेवाली निर्मल की माँ स्नान करके निर्मल के साथ निकलती है। भिखारिन को लगता है कि वह उसे कुछ देगी इसलिऐ उनके साथ चलती है। निर्मल भावुक युवक था वह भिखारिन से पुछता है कि, "तुम भीख क्यों माँगती हो?"२ भिखारिन ने अपने फटे कपड़े संभालते हुए कहा, "पेट के लिए।"३ निर्मल माँ से कहता है कि इसे अपने घर नोकरी के लिए रखें। यह सुनकर माँ चिल्लाती है, "नोकरी पर रखू कौन जाने किस जाती की है।"४ निर्मल कहता है "दरिंद्रो की एक ही जाती होती हैं।"५ भिखारिन चली जाती है। निर्मल को बुरा लगता है। पर मजबुरी से वह मां के साथ चला जाता है।

निर्मल फिर भाभी के साथ गंगा में स्नान करने के लिए जाता है। तब निर्मल देखता है वहीं भिखारिन बैठी– बैठी कुछ गुनगुना रही थी। निर्मल के साथ भाभी का बच्चा था। उसे देखकर भिखारिन बच्चे को आर्शीवाद देती है

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश–दीप" कहानी संग्रह –"भिखारिन"–पृ. क्र. ४६
२. वही – पृ. क्र. ४७
३. वही – पृ. क्र. ४७
४. वही – पृ. क्र. ४७
५. वही – पृ. क्र. ४७

उसे वह निर्मल का बच्चा लगता है। आर्शीवाद देने के बदलें में वह कुछ चाहती है। भाभी उसे रोकती हैं। स्नान करके निर्मल आता हैं तो वह कहती है, "बाबूजी, कुछ मिलेगा?"१ भाभी कहती है बाबूजी का दयाह नहीं हुआ जब होगा तब तुझे जरुर कुछ न कुछ मिलेगा। भिखारिन को इकन्नी–दुअन्नी देकर उसकी भूख मिटाना यही धर्म है, मगर उसे जानता कोई नहीं है।

निर्मल भिखारिन से शादी करने की बात करता है, सुनकर भाभी चकित हो जाती है। भिखारिन जबाब देती है कि दो दिन से कुछ मांग रही हूं तो आपने कुछ दिया नहीं। ब्याह करके निभाना तो दूर की बात है। भिखारिन नाराज होकर वहाँ से चली जाती हैं। भाभी का बेटा रामू चालाकी से दुअन्नी निकालकर भिखारिन की ओर फेंकता है। रामू की इस दया पर निर्मल और भाभी को प्रसन्नता हो जाती है। दोनों देखते हैं भिखारिन गुनगुनाती चली "सुनो रे निर्धन के धन राम!"२

२.१.७ प्रतिध्वनी :

"प्रतिध्वनी" इस कहानी में. प्रसाद ने दिखाया है कि, मानवी मन की जलन, इर्षा कभी बुझती नहीं है। यह मानवी स्वभाव की विशेषता चित्रित करने का एक प्रयास हैं। हिंदू समाज में विधवा के लिए पीड़ा यातना और अपमान भरी जिंदगी के अलावा क्या मिलता है? तारा भी विधवा है, मगर ननद के दिल को छेदनेवाले तिखेशबद कानों पर पड़े "पाप किसका किसे खा गया?"३

तारा संपन्न थी। ननद रमा अपनी बेटी श्यामा के साथ दरिद्रता में जीने लगी। दहेज नहीं मिलेंगा इस बात से श्यामा से ब्याह करने के लिए कोई तैयार नहीं होता। श्यामा चौदह बरस की हुई, मगर रामा उसका ब्याह नहीं कर सकी। एक दिन रामा हमेशा के लिए दुनिया छोड़कर चली जार्ती है। श्यामा अकेले और बेसहारा हो जाती है।

१. जयशंकर प्रसाद–"आकाश –दीप" कहानी संग्रह–"भिखारिन"– पृ. क्र. ४६
२. वही – पृ. क्र. ४८
३. जयशंकर प्रसाद–"आकाश–दीप" कहानी संग्रह–"प्रतिध्वनि" – पृ.क्र. ४९

श्यामा मन्नी नाम की एक बुढ़िया के साथ अपना जीवन बिताने लगती है। दरिद्रता के कारण श्यामा की आम की बारी भी निलाम हो जाती है। तारा श्यामा के बारी के पास से ही जा रही थी। वह आम तोड़ लेती है। तब श्यामा कहती है तोड़ लो मामी, यह तो निलाम ही होनेवाला हैं। सुनकर तारा को बूरा लगता है। बहुत दिनों की बात प्रतिध्वनित होने लगी "किसका पाप किसे खा गया रे!"१ तारा को लगा कि रामा की कन्या उसे भीख लेने को कह रही है। गुस्से से तारा वहां से चली जाती हैं। आम बारी की निलामी हुई। उसमें एक – दो – तीन अंक श्यामापर गहरा प्रभाव डाल गयें। तारा वह बारी खरिदती है। श्यामा आम के वृक्ष के नीचे चुपचाप बैठी थी। वह पगली की तरह एक–दो–तीन कहने लगी।

तारा अपने आई के पुत्र प्रकाश को अपनी जायदार का वारिस बनाती हैं। मुफ्त का माल मिलने से वह विलासी बन जाता है। श्यामा की बारी को बहुत सजाता है। उसका घर तोड़कर बंगला बनाता है। एक दिन श्यामा ने उसी बारी से पके आम तोड़ें, तो माली उसे पकड़कर प्रकाश के पास ले जाता है। प्रकाश क्षय से ग्रस्त खास्ताहाल स्थिति में जी रहा है। विलासी प्रकाश ने श्यामा को देखा, श्यामा का यौवन अभी भी उसे आकर्षित करता है। प्रकाश को अपने रोग पर क्रोध आ जाता है। प्रकाश प्रगली को गाली देने लगा। तब पगली श्यामा कहती है, तूझे किस पाप का यह फल मिल गया। और वह एक–दो–तीन गिनने लगी। प्रकाश की आँखो के सामने पगली का पागलपन लाल वस्त्र पहनकर नाचने लगा। वह आम प्रकाश की तरह फेंकने लगी और गिनने लगी एक – दोन– तीन और उसकी प्रतिध्वनी में गुंज उठी।

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश –दीप" कहानी संग्रह–"प्रतिध्वनि" – पृ.क्र. ५०

२.१.८ कला :

"कला" यह एक प्रेमकहानी है। रुपनाथ, रसदेव और कला की यह कहानी प्रेम भर जिंदगी की दास्तां है। साथ ही तीनों अलग–अलग कला के कलाकार भी हैं। स्कुल में रुपनाथ, रसदेव और कला एक साथ पढ़ते थें। स्कुल में तिनों बातें करते एक दुसरे से छेड़छाड़ करते हैं।

एक दिन स्कुल की पढ़ाई पूरी कर के कला चली जाती हैं। मगर इन दो प्रेमियों के मन में प्यार की मुरत बना के जाती है। चित्रकार रुपनाथ कला के कई चित्र निकलवाता है। अपने दिल की देवी के कई चित्र निकलवाता है। रसदेव भी कला पर कई कविताएँ लिखता है। एक – दूसरे से दूर रहकर भी कितने नजदीक होते हैं।

एक समारोह में चित्रकार के चित्रों की प्रदर्शनी होती है। उस समारोह में कला, रुपनाथ और रसदेव तीनों आ जाते है। उस समारोह में कला रसदेव का लिखा गीत गाकर नृत्य कर रही है। अंत में समारोह के बाद कला कंगाल रसदेव को पहचानती है और फूलों की विजयमाला उसके चरणों पर बिखेर देती है।

२.१.९ देवदासी

"देवदासी" यह प्रसाद की अलग दंग की कहानी है। "देवदासी" यह कहानी पत्र शैली पर लिखी कहानी है। भारत के रुढ़ीग्रस्त समाज में भगवान के मंदिर की देवदासी को भगवान को अर्पित किया जाता था। मगर परंपरावादी समाज उस स्त्री को अनैतिक जीवन बीताने पर मजबूर करता है। धर्म के ठेकेदारों ने अपनी अय्याशी के लिए ऐसी कढ़ियां बनाई हैं। दक्षिण भारत में चली प्रथा को एक मित्र ने दुसरे मित्र को पत्र के व्दारा बतायी है।

अशोक पुस्तकें बेचने का काम करता है। भारतीय मंदिर देखकर वह प्रसन्न हो जाता है। प्राचीन भारतीय संस्कृति, उसका सौंदर्य उसे आकर्षित

करता है। वहां पर ही वह पुस्तकें बेचने का काम करता है। उसकी बिक्री भी अच्छी होती है। वहां पर चिदंबरम् नाम के पंड़ा से अशोक की पहचान हो जाती है। बाद में पद्मा से मुलाकात होती है जो हिंदी सिखना चाहती है। पदमा और चिदंबरम् में खुब पटती है।

पद्मा देवदासी है और मंदिर में नाच गाना करती है। अशोक रमेश से कहता है कि, मैं उसके रुप सौंदर्य का वर्णन करने में असमर्थ हूँ। एक दिन गाँव को धनवान का बेटा रामस्वामी पद्मा को अकेले में मिलने को कहता है, मगर पद्मा इन्कार करती है। पद्मा स्पष्ट शब्दों में कहती है, "मंदिर में दर्शन करनेवालों का मनोरंजन करना मेरा कर्तव्य है, मैं देवदासी हूँ!"१ अशोक को लगता है कि, धनवान लोग गरिब लोगों पर अत्याचार करते हैं। रामस्वामी धन के बल पर उसें बार – बार कुरेदता है, मगर पीछा नहीं छोड़ता।

अशोक पद्मा के साथ शादी कर उसे सम्मान देना चाहता है। उसे नर्क से बाहर निकालना चाहता है। रामस्वामी और अशोक दोनों पद्मा से प्यार करते हैं। उसके लिए मर मिटने को भी तैयार हैं। पद्मा और अशोक एक उँचे पहाड़ पर बैठे बातें कर रहे थें। रामस्वामी ने पद्मा को अशोक के साथ देखा तो उसे गुस्सा आ गया। रामस्वामी पद्मा को घसीटने लगा तो अशोक ने उसे जोर से धक्का दिया। रामस्वामी तीन सौ फीट नीचे खाई में गिर गया। चिदंबरम् पद्म। को कुछ न बोलने के लिए कहता है और अशोक को साथ लेकर चला जाता है। तब से अशोक का मन अपने आपको दोषी मानने लगता है। उस बात का असर पद्मा पर भी होता है। अशोक पद्मा को शादी के लिए पुछना चाहता है लेकिन पुछ नहीं सकता। वह पद्मा को सौभाग्य भरी जिंदगी देना चाहता है मगर ऐसा नहीं होता.

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश –दीप" कहानी संग्रह –"देवदासी"– पृ.क्र. ६३

२.१.१० समुद्र – संतरण :

"समुद्र – संतरण" इस कहानी में सुदर्शन एक राजकुमार है। अपने राजवैभव से दूर आकर वह प्रकृति का सौंदर्य एक टक देखा रहा है। सुदर्शन मे देखा कि एक धीवर – कुमारी मछली फाँसने का जाल लिये समुद्र तट के कगारों पर चढ़ रही है।

राजकुमार धीवर बाला का सौंदर्य देखकर उसकी तरफ आकर्षित हो जाता हैं। राजकुमार उसे सुंदरी कहकर पुकारता है, तो वह धीवर–बाला पुछती हैं, "मुझमें क्या सौंदर्य हैं?"१ राजकुमारे बताता है, "तुम्हें देखकर आज पहली बार मुझे सौंदर्य पर विश्वास हो गया है"। २ वह धीवर–बाला को बताती है कि, वह राजकुमार है। धीवर – बाला से पूछता है "तुम क्या करती है?"३ वह बताती है कि, मैं मछलियाँ फँसाती हुँ"४ कहकर वह जाल बिखेर देती है। दोनो में चर्चा होती है। तब वह कहती है, राजकुमार की शादी है, उसके लिए मछली भेजनी है। राजकुमार कहता है शादी नहीं होगी क्योंकि राजकुमार मै हूँ। धीवर – बाला एक बार सुदर्शन की तरफ देखती है और मछलियों को छोड़ देती है। रात का समय होते ही वह बाला चली जाती है।

राजकुमार को बुलाने लोग आते हैं, उनको वापस भेज देता है यह कहकर कि उसका कुछ खो गया हैं। सुंदरी उसके मन में बस जाती हैं। दुबारा लोग लेने आ रहें देखकर वह समुंदर में कुंद पड़ता हैं। सुदर्शन तैरते – तैरते थक जाता है। तब सुरीले मधूर गीत कानों पर पड़ जाते हैं। एक नाँव उसके पास आ जाती हैं। उसमें धीवर–बाल होती है। धीवर – बाला उसे नाव पर लेती हैं।

---

१. जयशंकर प्रसाद–"आकाश–दीप" कहानी संग्रह–"समुद्र–संतरण"–पृ.क्र. ७१
२. वही – पृ. क्र. ७१
३. वही – पृ. क्र. ७१
४. वही – पृ. क्र. ७१

नाँव चल पडती है जहाँ कठोरता नहीं शीतलता, कोमलता है। प्रवंचना नहीं आत्माविश्वास है। वैभव नही सौंदर्य हैं। नाव में बैठे दोनों हसने लगते हैं। साथ ही साथ जलनिधी और चंद्रमा भी। इस कहानी में लेखक में अभिजात कुल का निम्नजाती की लडकी के साथ प्रेम दिखाया है।

२.१.११ वैरागी :

"वैरागी" इस कहानी में प्रसाद ने एक वैरागी का चित्रण किया हैं। वैराग का मतलब ही सभी भौतिक सुख – साधनाओं से दुर रहना है। पहाड़ के नीचे वृक्षों के बीच एक वैरागी शिलाखंड़ पर बैठकर साधना करता हैं। वैरागी ब्रम्हचर्या व्रत का पालन कर रहा हैं। वह अपनी साधना में मग्न होता हैं इतने में उसे कोई पुकारता है। वहाँ एक सुंदरी आ जाती है और वह वैरागी के पास आश्रय मांगती है।

वैरागी का ध्यान टुट जाता है, सामने देखता है तो एक सुंदरी खड़ी होती है। वह उसका स्वागत करता हैं। स्त्री वृक्ष के नीचे बैठती है और वैरागी अपनी कुटी के व्दार पर खड़ा रहता है। स्त्री वैरागी को सवाल करती है कि, तुमने संसार की सब सुख–सुविधा ठुकरा दी और इस भूमिखंड़ का इतना मोह क्यों? इतना परिश्रम और यत्न किसीलिए करते हो? वैरागी बताता है, "मैं अतिथियों की सेवा करना चाहता हुँ। जिसे आश्रय नहीं है उसे आश्रय देना चाहता हूँ।"१ स्त्री सवाल करती हैं "कब तक दूसरों की सेवा करोगे?"२ वैरागी बताता है "जब तक शरिर में प्राण है तब तक दुसरों की सेवा करुंगा।"३ वैरागी स्त्री से पुछता है तुम कितने दिन यहां पर रहोगी! वह बताती है कि दुसरा आश्रय मिलने तक।

रात का समय था बाहर ठंड़ लग रही थी। वैरागी लकड़ियाँ सुलगाता है और स्त्री को ओढ़ने के लिए कंबल देता है। स्त्री रात भर बाहर ही रह जाती

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश – दीप" कहानी संग्रह – "वैरागी" –पृ.क्र. ७५
२. वही – पृ. क्र. ७५
३. वही – पृ. क्र. ७५

है क्योंकि वह बाकी लोगो के सुख में बाधा नही ड़ालना चाहती है। स्त्री के बोल सुनकर वैरागी को धक्का लगता है । वह बताता है कि "तुम स्वतंत्रता से यहाँ रह सकती हो।"१ लेकीन स्त्री बताती है इस झोपड़ी का मोह तुमसे छुटा नहीं है और व उसमे समभागी नहीं होना चाहती है। वैरागी इस जबाब से विचलित हो जाता है। 'मुझे कोई बुला रहा है' ऐसा कहकर वैरागी अंधकार में लय हो आता है। पथिक देख रहे थें झोपडी के व्दार पर कोई इंतजार कर रहा है।

२.१.१२ बनजारा :–

'बनजारा' इस कहानी में प्रसाद ने एक बनजारे का चित्रण किया है। जो नंदू नाम का व्यापारी व्यापार करता है। व्यापार के कारण घुमना ही उसका जीवन है। पथ पर चलते बनजारे गीत गाति हैं। नंदू अपनी धून में चल रहा था। तभी अचानक उसे चिल्लाने की आवाज आती है। उस बनजारो की टोली पर ड़कैती ड़ाका ड़ालते हैं। घबराकर नंदू पहाड़ी की गहराई में उतरता है और वह गिर पड़ता है ।

नंदू जख्मी हो जाता है। वह बेहोश हो जाता है। सुबह होने तक वह बेहोश ही रहता है। सूरज की किरणें झोपडी में सोए नंदू पर पड़ती हैं। एक सॉवली सी युवती उसका मुख एकटक देख रही है। वह मुस्कुराती है। नंदू आँखे खोलता है, तो मोनीको अपने पास खड़ी पाता है। मोनी के हाथ मे गरम दुध था जो नंदू को पिला रही थी।

नंदू ठीक हो जाता है। अचानक वहा पर पुलीस आ जाती है। चौकीदार हँसकर मोनी से कहता है, "डाका डालती हो और दया भी करती हो।"२ मोनी को बुरा लगता है वह चौकीदार को झोपड़ी से बाहर निकलने को कहती है। मोनी के मन मे नंदू के लिए प्यार पनप रहा है। पुलीसवाले की

---

१. जयशंकर प्रसाद – "आकाश – दीप" कहानी संग्रह –"वैरागी" –पृ.क्र. ७६
२. जयशंकर प्रसाद –"आकाश – दीप" कहानी संग्रह –"बनजारा"–पृ.क्र. ७८

बूरी नजर उसपर होती है। चौकीदार जान – बुझकर ड़कैती मे मोना को फसाना चाहता है। मोना के हाथ में हथकड़ी पहनाकर उसे ले जाने लगता है।

मोनी नंदू की तरफ देखती है और बोलती है "मै किसी को नहीं जानती, और नहीं जानती थी कि उपकार करने जाकर यह अपमान भोगना पडेगा।"१ जेल की भीषणता याद कर के वह ड़र जाती है। चौकीदार से कहती है मेरा सब कुछ ले लो पर मुझे छोड़ दो। ड़कैती मे मोना को फंसाकर चौकीदार उससे अपनी विकृत इच्छा पुरी करवाना चाहता है। मोनी इन्कार करती है। बाद मे नंदू दरोगा से सही बात समझाता है तो मोना को छोड़ दिया जाता है और चौकीदार पर ड़ांट पड़ती है । मोनी और नंदू दोनो वहा से चले जाते हैं।

कई महीनो बाद दुबारा नंदू उस रास्ते से अपने साथिओ के साथ गुजर रहा था। तब वह मोनी से मिलने जाता है । नंदू मोनी से प्याज, मेवा के बारे मे पूछता है। मोनी जबाब देती है कि, अब वह प्याज, मेवा नहीं देगी। सूनकर नंदू नाराज हो जाता है। अपने बैलों की पीठ पर हाथ फेरता है और चुपचाप अपने पथपर निकल पडता हैं।

२.१.१३ चूडीवाली :–

प्रसाद की 'चूड़ीवाली' कहानी एक चूड़ीवाली के जीवनपर आधारित है। कहानी में दिखाया है कि, समाज में अनेक तरह के व्यवसाय करनेवाले लोग होते हैं। परंतु नाच–गाना करके जीवन बितानेवालो को समाज में कोई इज्जत नहीं होती। कहानी की नायिका चूड़ीवाली भी ऐसा ही काम करती थी। चूड़ियाँ बेचने का काम करती है। गाँव के सरकार के घर में उनकी पत्नी के लिऐ हमेशा चूड़ियाँ लेकर जाती थी। सरकार की पत्नी आने के लिए मना करती है लेकीन फिर भी वह आ जाती थी ।

चूड़ीवाली का नाम विलासिनी था। नगर की एक प्रसिध्द नर्तकी की वह कन्या है । सबकुछ उसके पास होने के बापजूद भी उसे संतोष न मिलता था।

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश – दीप" कहानी संग्रह –"बनजारा"–पृ.क्र. ७९

चूड़ीवाली कुलवधू बनना चाहती थी और दाम्पत्य – सुख के सुनहरे सपने वह देखती थी। चूड़ीवाली जो व्यवसाय करती थी उससे वह कुलवधू नहीं बन सकती इसके बारे में वह जानती थी। फिर भी चूड़ीवाली गाँव के सरकार की पत्नी बनने के ख्वाब देखती है। गाँव के सरकार विजयकृष्ण उसे गृहस्थ जीवन बिताने के योग्य लगने लगें। सरकार चूड़ीवाली के मन की बात जानकर भी अनजान बने रहें। सरकार शादीशुध्दा है यह जानकर भी चूड़ीवाली उनके गृहस्थ जीवन में बाध ड़ालना चाहती है ।

चूड़ीवाली सरकार की पत्नी की अपार प्रणय – संपत्ति में से कुछ अंश लेना चाहती है । चूड़ीवाली के सौभाग्य से सरकार की पत्नी बीमार हो जाती है और उसी बीमारी मे ही ऊसका देहांत हो जाता है। चूड़ीवाली को लगता है कि, वह जीत गई। मगर वह हार जाती है। सरकार चूड़ीवाली से कहते है कि, मै वेश्या के द्वारा दी गई जीविका से पेट – पालन नहीं करुंगा और वे वहाँ से चले जाते है। चूड़ीवाली को लगता है इतना कुछ करने पर भी मेरे व्यवसाय के कारण सरकार मेरे न हो सके । इसत बात का उसे बहुत बूरा लगता है क्योकी चूड़ीवाली सरकार से बहुत प्यार करती है।

सरकार की 'वेश्या' कह जानेवाली बात से ही चूड़ीवाली अपनी जीवनचर्या बदल ड़ालती है । सरकार से जो संपत्ति मिली थी उसे बेचकर पास के गाँव में खेती करने के लिए जमीन खरिदती है। दुसरों की सेवा करने का धर्म स्वीकार लेती है ।

शाम का समय था। चूड़ीवाली अपने विचारों में मग्न थी। इतने में छोटा नंदू आकार कहता है की, एक आदमी आया है, बहुत थका हुआ है और मैं कुछ उसे देना चाहता हूँ तो वो मुझसे कुछ लेता नहीं है । चूड़ीवाली उस आदमी को देखने के लिए जाती है और हाथ जोडकर उसे भोजन करने को कहती है। वह आदमी पूछता है "तुम कौन हो?"१ चूड़ीवाली बताती है कि, मैं

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश –दीप" कहानी संग्रह –"चुड़ीवाली"–पृ.क्र. ८६

पहले वैश्या थी। आदमी कहता है की, मुझे वेश्या की कुछ नाहीं चाहीए क्योंकी वेश्या दुसरो का घर उजाड़ती है । चूड़ीवाली इसका जबाब देती है, "मैं अपनी कला पेश करती हूँ लेकीन जो लोग कला का मूल्य लगाते है वह बुरे हैं।" चूड़ीवाली कहती है की, "मैं वेश्या होने के बावजूद भी मैंने एक ही व्यक्ती से प्रेम किया है।"१ मैं और कुछ नही जानती। जिससे मैने प्यार किया वो सरकार जिनसे मुझे जो कुछ मिला ऊसे मैंने दुसरो की सेवा करने में लगा दिया। आदमी के मुख से निकलता है चूड़ीवाली। चूड़ीवाली पहचानती है कि वह सरकार हैं। सरकार को संतोष होता है कि चूड़ीवाली अच्छी जिंदगी जी रही है। उसकी सफलता भरी जिंदगी की कामना कर के आखिर दोनों एक – दुसरे के हाथ मे हाथ लेकर हमेशा के लिए एक दुसरे का सहारा बन जाते हैं।

२.१.१४ अपराधी :–

'अपराधी' इस कहानी के माध्यम से प्रसाद ने दिखाया है की गरीब लोगो के जीवन का मूल्य राजा–महाराजाओ के पास कुछ भी नही है। प्रस्तुत कहानी की नायिका कामिनी है। कामिनी मालिन का काम करती है। कामिनी अकेली थी उसका और कोई सहारा नहीं था। उपवनो में फूल तोडकर, माला बनाकर उसपर अपनी जिविका चलाती है ।

एक दिन राजकुमार वहां आ जाते हैं। ऊसे पुछते है "तुम कौन हो?" २ वह बता देती है "मालिन।"३ फूलो की माला बनाकर बेचने का काम करती हूँ राजकुमार पुछते है "तुम कौनसी माला बना रही हो।"४ तो वह बताती है कि "कामिनी के फूलो की"५ और ऊसका नाम भी कामिनी होता है। राजकुमार

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश –दीप" कहानी संग्रह –"चुड़ीवाली"–पृ.क्र. ८७
२. जयशंकर प्रसाद –"आकाश –दीप" कहानी संग्रह –"अपराधी"–पृ.क्र. ८८
३. वही – पृ. क्र. ८८
४. वही – पृ. क्र. ८९
५. वही – पृ. क्र. ८९

15497

कहता है मै जब वापस आऊंगा तब ये माला ले जाऊंगा उसे पुरी बनवा दो कहकर राजकुमार चला जाता है। राजकुमार माला लेने वापस आ जाते हैं, कामिनी से माला पहनवाकर चले जाते हैं। कामिनी अपनी कुटी में थी। इतने में कोई उसके पास आश्रय मांगता है। अपने आप को अपराधी कहता है। कामिनी उसे आश्रय देती है, बाद मे देखती है तो वही राजकुमार थे। कामिनी राजकुमार की नजर का शिकार बन जाती है ।

बहुत साल बीत जाते हैं। पर्णकुटी में कामिनी अपने बेटे के साथ रहती है। उसका पुत्र कुरंग पकड़कर बेचने का काम करता है। एकदिन वह कुरंग पकड़कर नगर की ओर जाता है वहां पर राज का पुत्र कुरंग देखकर उसे छिनना चाहता है। यह देखकर कामिनी – पुत्र उसे उड़ने के लिए छोडता है। रक्षक कामिनी पुत्र को पकड़ लेते हैं। राजकुमार रोने लगता है यह देखकर रानी को गुस्सा आता है। वह तुरंत कामिनी पुत्र पर कोड़े बरसाने का आदेश देती है। कामिनी पुत्र बिना कुछ बोले सब सह लेता है। वापस आता है तो अपने बेटे को देखकर कामिनी दु:खी हो जाती है ।

कई वर्ष बीत जाने के बाद राजा स्वयं राजकुमार को लेकर उसी वन में धर्नुविदया देने के लिए आते हैं। सोलह बरस के बाद वापस आने से राजा को पुराने दिन याद आते हैं, जो उसने कामिनी के साथ बिताये थें। राजपुत्र धर्नुविदया की शिक्षा जंगल में ले रहे थें और कामिनी – पुत्र कुरंग पर तीर चला रहा था। तीर कुरंग के कंठ से बंधकर राजकुमार को लगता है । राजकुमार वही पर गिर पड़ता है । इधर राजा के आने की खबर से कामिनी फूल खोजने लगती है । राजा क्रोध से सैनिको को आदेश देते हैं कि उसे मारो। सैनिक कामिनी – पुत्र को मार ड़ालते है। कामिनी वापस आकर अपने पुत्र का शव देखती है तो रो पडती है। दुसरा शव देखती है वह राजकुमार का होता है। राजा कामिनी को पहचानते हैं और कामिनी से सवाल करते है तुम जिसके

लिए रो रही हो यह कौन है। कामिनी गंभीर स्वर में जबाब देती है "यह अपराधी है।"

२.१.१५ प्रणय चिहन्

"प्रणय–चिहन्" यह एक प्रेमकहानी हैं। इस कहानी में एक एकांतवासी का चित्रण किया हैं, जो दुनिया से रुठकर एकांत में चला जाता है। वह अकेला रहना चाहता है मगर जिससे वह प्यार करता है, उसकी यादें उसके साथ होती हैं। उसका मन उसे भूल नही सकता हैं। एकांतवासी गूफा से बाहर निकलता हे। चलते –चलते वह खजूर –कुंज तक पहुँच जाता हे और बेसुध होकर गिर पड़ता है। वहां एक पथिक उसकी मदद करता है। उसका नाम होता है सेवक। सेवक पुछता है "तुम कहां जाओंगे?"१ एकांतवासी बता देता है, "संसार से घबराकर एकांत में जाना चाहता हुँ।"२ सेवक बता देता है कि, "मैं एकांत से घबराकर संसार में जाना चाहता हुँ।"३

सेवक उसे नगर में वापस लौट जाने की बात कहता है। लेकिन एकांतवासी जाने से इन्कार करता है। एकांतवासी सेवक के पास अपनी प्रियतमा के लिए संदेश भेजता है, "तुम्हारा प्रेमी तुम्हारे प्रणय–चिहन् का इंतजार कर रहा है, शायद कभी वापस नहीं आयेगा। यह कह दो तब तक मैं इंतजार करता हूँ।" सेवक चला जाता है अपनी माँ से मिलता है। एकांतवासी की प्रेमिका का संदेश पहुँचाता है। वह सुंदरी सेवक की नाव में आकर बैठती है और उसे अपने प्रियतम के पास पहुँचाने को कहती हैं।

सेवक उसे प्रियतम के पास पहुँचाता है तब वह सुंदरी उसे बदले में पुरस्कार देना चाहती है। लेकिन उसके पास एक अगुंठी होती है जो उसका चिहन् था और कुछ भी नहीं था। वह चिहन् अपने प्रेमी को देना चाहती है यह सेवक को बता देती है। लेकिन सुंदरी को लगता है कि उसके अंतिम मिलन में

---

१. जयशंकर प्रसाद–"आकाश –दीप" कहानी संग्रह–"प्रणय–चिहन्–पृ.क्र. ९७
२. वही – पृ. क्र. ९७
३. वही – पृ. क्र. ९७

सेवक ने ही सहायता की है इसलिए वह अंगूठी सेवक को देती है और अपने आपको प्रियतम को दे दूंगी बता देती है। सेवक खुश होकर वहां से चला जाता है।

एकांतवासी खजूर इकठ्ठा कर रहा था। इतने में सुंदरी उसके सामने आकर खड़ी हो जाती है। एकांतवासी बता देता है कि मैं तुम्हारे प्रणय – चिहन् का इंतजार कर रहा हूँ। सुंदरी उसे एकांत की दुनिया से वापस संसार में चलने के लिए कहती है। लेकिन वह इन्कार करता है और बताता है "में केवल प्रणय–चिहन् से अपना मन बहलाऊँगा।"१ सुंदरी बताती है "मैं उसे पुरस्कार के रुप में दे आयी हूँ।"२ सुनकर एकांतवासी वापस चलने के लिए तैयार हो जाता है।

सेवक तय करता है जब सुंदरी वापस आयेगी तो उसे अंगुठी दे देगा। इतने में उसे सुंदरी दिखाई देती है और साथ में एकांतवासी भी दोनों नाव में बैठ जाते हैं। सुंदरी सेवक को पुरस्कार के रुप में दिया हुआ प्रणय–चिहन् वापस मांगती है क्योंकि उसके प्रियतम को वह देना था। सेवक कहता है कि, यह अन्याय है मैं दरिद्री हुँ मुझे उसकी जरुरत हैं। सेवक उन्हें यात्रा पर ले जाने की बात कहता है, एकबार अपनी झोपड़ी की तरफ देखता है, उसकी माँ मर चुकी थी। सुंदरी और एकांतवासी को लेकर, सुंदरी का मुख देखकर सेवक नाव खेने लगता है। तीनो और वहां से चले जाते हैं।

२.१.१६ रुप की छाया :

"रुप की छाया" इस कहानी में प्रसादजी ने सामाजीक रुढ़ी का शिकार सरला का चित्रण किया है। सरला का बाल–विवाह हो जात है। मगर उसका पति उसे छोड़कर चला जाता है। सरला एकांत में बैठी भिखारी का गीत सून रही थी। अचानक उसकी दृष्टि एक युवक पर पड़ जाती है, उसने फटा हुआ

---

१. जयशंकर प्रसाद–"आकाश–दीप" कहानी संग्रह–"प्रणय–चिहन्"–पृ.क्र. ९८
२. वही – पृ. क्र. ९८

कोट पहना था और पुस्तक पढ़ने में वह मग्न था। सरला उस युवक के पास आकर लौट जाती हैं।

सरला अपनी प्रौढ़ा संगिनी को कुछ कहकर वहां से चली जाती हैं। प्रौढ़ा उस युवक से पुछती है कि तुम विदयार्थी हो? युवक हाँ कहता है। प्रौढ़ा उस युवक को अपने पास रहने के लिए ले जाती है। युवक पुस्तक और सामान लेकर प्रौढ़ा के साथ चलने लगता है।

कमरे में प्रकाश फैला था युवक वहां पर बैठा था। उसका रहन –सहन बदल गया था। अब वह एक सुरुचि–संपन्न युवक बन गया था। प्रौढ़ा उसे शैलनाथ कहकर पुकारती है और चाची के बारे मे पुछती हैं। युवक कहता है मेरी कोई चाची नहीं हैं। सरला युवक को पान देती है और एक सवाल पुछने की इजाजत लेती है। सरला उसे रामगांव के बारे में पुछती है साथ – ही – साथ कार्तिक पूर्णिमा में स्नान करनेवाली बात पुछती है। युवक को लगता है कि उसके जीवन में ऐसी कोई घटना ही घटित नहीं हुई है वह साफ इन्कार कर देता है।

कई दिन बीत जाने के बाद सरला शैलनाथ को बुला लेती है। शैलनाथ उसके पास बैठ जाता है। सरला उसे बता देती है कि, "तुम मेरे पति हो, तुमसे मेरा बाल –विवाह हुआ था। लेकिन चाची के बिगड़ने पर तुम घर से चले गये, फिर वापस नहीं आये।"१ मै, और मेरी सहेलियाँ तुम्हे ढुंढ रही थीं। "तुम मेरे देवता हो, तुम्ही मेरे सर्वस्व हो एकबार हा कह दो।"२ सरला का यौवन उभरकर सामने आ जाता है। शैलनाथ हां कहनेवाला था कि उसके मुँह से निकल पडता है कि "यह तुम्हारा भ्रम है।"३ शैलनाथ कहता है कि

---

१. जयशंकर प्रसाद–"आकाश–दीप" कहानी संग्रह–"रुप की छाया"–पृ.क्र. १०२
२. वही – पृ. क्र. १०२
३. वही – पृ. क्र. १०३

यह पाप है। सरला उसे कहती है मैं पाप को पुण्य में बदलना चाहती हूँ। मगर वह युवक वहां से चला जाता है। रात के अंधकार में सरला के रुप की छाया विलीन हो जाती है।

२.१.१७ ज्योतिष्मती :

"ज्योतिष्मती" इस कहानी में प्रसाद ने एक प्राकृतिक फूल का चित्रण किया है। जिसे सिर्फ प्यार करनेवाले ही छुते हैं। पवित्र प्रेमिओं को ही छूने का अधिकार होता हैं। ऐसे ही फूल की तलाश में एक अबोध बालिका रात के समय घर से बाहर निकलती है।

चलते – चलते वह इतनी दूर चली गयी कि निराश होकर एक शिलाखण्ड पर बैठ जाती है। अचानक एक युवक उसकी पीठ पर हाथ रखता है। बालिका से कहता है कि, "ऐसी रात की घडी में तो दस्यु बाहर निकलते हैं, तो तुम ऐसी घडीपर घर से क्यों बाहर निकली हो।" दस्युओं की बात सुनकर वह बालिका घबरा जाती है। बालिका उस युवक से पुछती है "तूम कौन हो?"१ युवक बता देता है। "वह एक साहसिक है।"२ बालिका उसे एक काम करने के लिए कहती है। युवक बडे साहस से कहता है "तुम्हें क्या चाहिए, सुंदरी? तुम्हारा नाम क्या है?"३ बालिका कहती है "वनलता!"४ बूढे, अंधे वनराज की सुंदर बालिका वनलता है।

वनलता युवक से कहती है कि, वह पिताजी के लिए ज्योतीपमती ढुंढ रही है। दोनों ज्योतिपमती की खोज में आगे निकलते हैं। वन में ढूंढने पर उन्हें एक कली मिली जो धीरे – धीरे पंखुडियों खोल रही है। वह साहसी युवक उसे हाथ लगाना चाहता है। वनलता उसे रोक लेती है भौर कहती है

---

१. जयशंकर प्रसाद–"आकाश–दीप" कहानी संग्रह –"ज्योतिष्मती"–पृ.क्र. १०५
२. वही – पृ. क्र. १०५
३. वही – पृ. क्र. १०५
४. वही – पृ. क्र. १०५

किसी प्रेमी ने उसे तोडा तो ही उसके गुण का फायदा हो सकता है। वनलता पुछती है "तुमने कभ किसीसे प्यार किया है?"१ युवक वनलता को "तुम्ही से"२ कहकर आगे निकलता है वनलता कहती है इसे जंगल के पवित्र प्रेमी ही छुते है तभी इसका असर हो जाता है। वनलता की बातों को बिना सुने युवक आगे निकलता है। वनलता उसे मना करती है पिताजी की आँखों के बारे में कहती है। युवक की छाया जब फूल पर पडती है तो फूल मेघ में विलीन हो जाता है। वनलता नाराज हो जाती है। प्रकृति का यह एक अनोखा चमत्कार इस कहानी में प्रसादने दिखाया है।

२.१.१८ रमला :

"रमला" इस कहानी में प्रसादने साजन का चित्रण किया है। जो मानव की शारीरिक और मानसिक जरुरतों को भूलकर जदेवता के समान झील के किनारे पड़ा रहता है। झील उसे खाने को हर तरह के फल देती है। साजन उसे कभी – कभी रानी कहकर पुकारता जिसकी प्रतिध्वनी गूंज उठती। ऐसे ही कितने बरस बीत जात हैं। साजन जहाँ रहता है वहाँ गाँव का कोई इन्सान नहीं जाता हैं। झील पर कोई जलदेवता रहता है यह गाँव में विश्वास था इसलिये उधर कोई जाता नहीं।

रमला गाँव में सबसे चंचल लड़की थी। अब वह बड़ी हो चुकी थी। रमला का ब्याह नहीं हुआ था क्योंकि हर लडके का मजाक उड़ाती और उसे चपत मारती। इन्हीं हरकतों से रमला की शादी नहीं हो पा रही थी। मंजल भी रमला को चिढ़ाया करता था। मंजला सब लड़कों को बताता है कि रमला को पहाड़ पर ले जाय। रमला पशु चराने के लिए पहाड़ पर जाती है। रमला

---

१. जयशंकर प्रसाद–"आकाश–दीप" कहानी संग्रह –"ज्योतिष्मती"–पृ.क्र. १०६
२. वही – पृ. क्र. १०६

पहाड़ पर खडी थी और मंजल मजाक से हल्का – सा धक्का देता है। मंजल रमला को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता है लेकिन उसके दिये धक्के से वह गिर पड़ती है। सब भाग जाते हैं।

साजन कभी – कभी झील पर घुमने न्किलता था। तब वह देखता है एक किशोरी जल में पैर लटकाये बैठी थी। साजन उसे पुछता है "तुम कौन हो?" वह कहती है "मैं रमला हूँ" साजन कहता है रमला रानी रमला कहती है रमला रानी नहीं, रमला हूँ। साजन बताता है मैं तुम्हारा सहचर हूँ। रमला साजन को कुछ खिलाने के लिए कहती है। साजन कहता है आगे रास्ता नहीं है इसलिये तैरकर जाना होगा। रमला तैरने लगती हैं और साजन उसे देखता ही रहता है। दोनों तैरते चलते हैं।

बहुत दिन बीत जाते हैं रमला और साजन एक साथ रहते हैं। साजन उसकी सब सेवा करता है लेकिन रमला उस बंदीगृह से भाग जाना चाहती है। साजन उसे अपने साथ रहने के लिए कहता है। साजन सोचने लगता है कि रमला के आने से वह बदल गया और उसके विचार भी बदल गए हैं। उसके मन की अंतर भावना जाग उठति है। साजन उसे रानी कहकर पुकारता है जिसकी प्रतिध्वनी पहाडियों मे गुँज उठती है। रमला बाहर आकर देखती है साजन उसे पुकार रहा है। साजन के स्वर में व्याकुलता थी। साजन रमला को अपनी रानी समझता है। रमला को देखकर साजन की सोई वासनायें जाग जाती है। एक दिन दोनों घुमने निकलते हैं। गाँव का जमींदार उन्हें देखता है उन्हें वस्त्र और भोजन देने की व्यवस्था करता है, साथ ही रहने का भी इंतजाम करता है। सुबह होते ही रमला जाग जाती हैं, देखती है साजन पास हो सोया था। गाँव का दृश्य देखकर रमला प्रसन्न हो जाती है। जमींदार आकर पूछता है कि, कोई तकलीफ तो नहीं हुई। युवक देखता है वह रमला थी और वह मंजल

था। मंजल उससे क्षमा मांगता है। मंजल सोये हुए मनुष्य की तरफ देखकर पूछता है यह कौन है? रमला बताती है " मेरा कोई नही।"१

मंजल रमला से पुछता है क्या तुम चली जायोगी? उसके स्वर में बड़ी कोमलता थी। रमला बेबसी से जबाब देती है "जैसा तुम कहोगे"२ साजन जाग जाता है, जिस पथ से आया था वही वापस जाना चाहता है।

२.१.१९ बिसाती :

"बिसाती" इस कहानी में प्रसादने गाँव और गाँव के लोगों का चित्रण किया हैं। शैलमाला के नीचे एक हरा–भरा आबाद गाँव है जिसमें शीरी, जुलेखा, सरदार और गाँव के सभी लोग आराम से रहते है। शीरी शिलाखंड पर बैठी प्रकृति का सौंदर्य देख रही थी। उसकी सहेली जुलेखा वहाँ पर आ जाती है जिससे शीरीं का एकांत टूट जाता है। जुलेखा उसे बुलबुल के बारे में पूछती हे कि वह आजकल दिखाई नहीं देता। बुलबुल लौट आयेगा ऐसा कहकर जुलेखा चली जाती है।

हिंदूस्थान के समृद्ध नगर की गली में एक युवक पीठ पर सामान लाद कर घुम रहा था। वह बहुत थ चुका था। कुछ बेचकर वह अपनी जीविका प्राप्त करना चाहता है। एक गृहस्थ उस युवक से सामान उधार मांगता है लेकिन उधार देने का सामधी युवक में नहीं होता। शीरीं अपने कल्पना से चौक उठती है। शीरीं को लगता है कि उस युवक के वस्तुओं का मूल्य देकर उसका बोझ हलका करना चाहिए।

कई महिनें बीत जाते हैं। शीरी का ब्याह एक धनी सरदार से हो जाता है। सरदार बहुत खुश होता है। एक दुर्बल युवक पीठ पर सामान लादकर आता है। शीरीं उसकी तरफ देखती है। लेकिन वह युवक अपना सामान खोलकर सजाने लगता है। सरदार अपनी प्रेयसी को उपहार देने के लिए काँच

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश –दीप" कहानी संग्रह –"रमला"–पृ.क्र. ११२
२. वही – पृ. क्र. ११२

की प्याली और कश्मीरी सामान ढुंढ़ने लगता है। शीरी चुपचाप देखती है। सरदार दाम देना चाहता है लेकिन युवक कहता है मैं उपहार में देना चाहता हूँ। युवक वह सामान चुनकर लाता है उसमें अपना हृदय लगाता है। इसलिये वह दाम पर नहीं दे सकता है। सरदार गुस्से से कहता है मुझे नहीं चाहिए, अपना सामान ले जाओ।

युवक सरदार से कहता है मैं थक गया हूँ, थोडी देर विश्राम करूंगा बाद मे चला जाऊंगा। युवक सुबह से पहले सब सामान वही पर छोड़कर चला जाता है। बिसाती अपना सामान छोड़ जाता है लेकिन लौटकर वापस नहीं आता। शीरीं को लगता है कि, उसने युवक का बोज उतार लिया, पर दाम नहीं चुकाया।

निष्कर्ष –

निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि, ''आकाश दिप'' कहानी संग्रह में कुल मिलाकर उन्नीस कहानियाँ है। सभी कहानियाँ का उद्देश पूर्ण है। ''आकाश दीप'' कहानी में त्याग, समर्पण पूर्ण प्रेम को दिखाया है। 'ममता' कहानी में भारतीय संस्कृति की, पहचान होती है। 'हिमालय का पथिक' में हिमालय का सौंदर्य और अलौकिक प्रेम दिखाया है। 'भिखारिन' कहानी में भिखारिन का मार्मिक चित्रण किया है। 'देवदासी' कहानी के माध्यम से समाज में प्रचलित रूढी, परंपरा को दिखाया है। 'वैरागी' कहानी में वैरागी का तो 'बनजारा' कहानी में व्यापर करने के लिए घूमनेवाले बनजारों का चित्रण किया है। 'चूड़ीवाली' कहानी में वेश्या व्यवसाय को दिखाया है। वेश्या भी एक व्यक्ती के मन से प्रेम करती है यह महत्वपूर्ण बात दिखाई है। बाल – विवाह का शिकार हुई सरला की मानसीक दशा का चित्रण 'रूप की छाया' मे किया है। प्रकृति चित्रण में प्रकृति के चमत्करिक फूल का चित्रण 'ज्योतिष्मती?' कहानी में किया है। 'रमला' और 'बिसाती' भी महत्वपूर्ण कहानियाँ है। इस प्रकार प्रसाद की कहानियाँ उच्चकोटी कहानियाँ है।